'एक औरत एक जिन्दगी' कहानी की विधवा का जीवन- संघर्ष

डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड
वै. धुंडा महाराज देगलूरकर,
महाविद्यालय, देगलूर

भारतीय विधवा का संघर्षमय जीवन आज भी हमारे रोंगटे खडे कर देता है। विधवा के लिए रीति नियम परम्पराएँ बहुत ही कठौर थे। वह सुबह श्याम पूजापाठ में मन लगाये। वह रंगीन साडी न पहने उसे गंजा बनाया जाता थो। ता की कोई उसके और न देखे उसे विद्रुप बनाया जाता था। उसे विवाह करने की स्वीकृति नही थी। पर पुरुष के लिए ऐसी कोई परम्परा नही थी। सारी परम्पराएँ स्त्री के लिए ही बनाई हुई थी। ऐसी भयावह परम्पराएँ तोडने का कार्य साहित्यकार करता है।

एक औरत एक जिंदगी इस कहानी के रचनाकार रामदास मिश्र है। वे हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार है। ये जितने समर्थ कवि है उतने ही समर्थ उपन्यासकार और कहानीकार भी है। रामदरश मिश्र की लंबी साहित्य यात्रा समय के कई मोडो से गुजरी है और नित्य नूतनता की छवि को प्राप्त होती है।

लेखक अपने समय और समाज की वास्तविकताओं तथा चेतना से लगातार जुडे रहे है।

एक औरत एक जिंदगी इस कहानी में लेखक रामदरश मिश्र ने एक विधवा स्त्री की संघर्ष भरी गाथा को प्रस्तुत किया है। इस कहानी की कथा नायिका भवानी ब्राम्हण विधवा बहु है। भारतीय समाज में विधवा स्त्री को कई यातनाओ से गुजरना पडता है इसका यथार्थ चित्रण इस कहानी में लेखकने किया है।

एक औरत एक जिंदगी इस कहानी को देखकर छायावादी कवि सुर्यकांत त्रिपाठी निराला की विधवा कविता स्मरण हो आती है।

"इस इष्ट देव के मंदिर की पूजासी
वह दीप शिखा सी शान्त भाव में लीन
वह क्रूर काल तांडव की स्मृति रेखासी
वह टूटे तरु की छूटी लता सी दीन
यह दलित भारत की विधवा है।"

विधवा भवानी अपने जीवन तपस्या में लिन है चारो और से उसका छल हो रहा है। लेखक ने कहा है भवानी कटे रुख की तरह गिरी थी और उसके चारो और फैला हुआ सून सान उसे निगल रहा था। बहु भवानी को ससूर गालिया देता था मारता था वह घर की खराब हालत देख रही थी बडबडाते कोदई के निकम्मेपन को।

लेखक अपने गाँव पाँच साल में एकही बार जाते थे। उनके बचपन का साथी नरेश अब इस दुनिया में नही है। नरेश की पत्नी विधवा भवानी अपने निकम्मे ससूर और दो छोटे बच्चो का सहारा बनती है। जवान विधवा अपनी मेहनत की कमाई पर जी रही वह किसी के आगे झकती नही है। गाँववालो को यह बात हजम नही होती।

एके दिन ससूर बाढ में बह गया और उसी बाढ में नरेशद्वारा बनवाए आधे मकान की दीवारे टूट-टूटकर डहने लगी बच्चा और बच्चो की लिए खडी भवानी चारो ओर गुजरती सिमाहीन बाढ उपर खुले आकाश से टुटता हुआ मेघ दिशाओं की ओर ताकती भवानी दीवारे टूट कर गिर रही थी। भवानी बच्चो को लिए सब देख रही थी घूँघट उठाए हुये। भवानी बहादूर स्त्री है वह पति और ससूर के मरने पर घर में रोते हुये नही बैठती खेत में कुआर की इस चिलचिलाती धूप मर्दो को मात करती हुई फावडा चला रही थी। उसके काम को देखकर लेखकने कहा है "भवानी कुदाली चलाती रही और हँस हँस कर बाते करती रही। वह जमीन की परते तोड रही है ..... ब्राम्हण अभिज्यात्य की जमी हुई सतेह तोड रही है नेय बीज उगाने के लिए।"विधवा ब्राम्हण भवानी घर के दरिद्रता का त्याग कर खेत की लक्ष्मी बनगई थी पुरुष को भी मात दे रही थी। भारतीय संस्कृति में मनुष्य के जन्मसे लेकर मृत्यू तक पूजा पाठ के संस्कार परम्पराएँ है। मृतक की आत्मा को शांति मिले इसे हेतू माघ की आमावस्या के समय गाँव की बडी बूढियों ने भवानी से कहा।" भवानी बहू चलो तिरबेनी नहा आएँ पति और ससूर का फूला भी छोडती आना।" भवानी ने अपने खेत को ही तीरथ कहा था उसी के शब्दो में- " नही काकीजी मेरे लिए तो ये खेत ही तीरथ-बरत है इन्हे छोडकर कहाँ जाऊं और मैने फूला तो सेंवती नदी में ही छोड दिया है यही अपनी माँ है।"

भवानी में हिम्मत गजब की है वह रीति परम्पराओ को तोड रही है। ऐसी गलत परम्पराओं को मानती नही।

विधवा के जीवन में तो सिर्फ काम करना ही उसका तीरथ वृत होता है।खेती ही उसका एक मात्र जीवन जीने का सहारा है। नदी उसकी माता है। धरती मां को छोडकर अन्य तीरथ वृत करने की से जरुरत नही लगती। उसके पति को मरे हुये छ: माह भी पूरे नही हुये थे। ससूर की तेरही होते ही यह घर से निकल पडी थी। गाँव की बूढियों ने समझाया उसी का कथन उदधृत है।

" बहू अभ तुम्हे शोभा नही देता इस तरह घूम-घूमकर काम करना। अभी नरेश को मरे कितने महीने हुए है और और कोदई को मरे कितने दिन हुए है। अरे कुछ पूजा-पाठ में मन लगाओं उनकी आत्मा को शांति मिलेगी।" भवानी ने बडा रुखा सा उतर दिया था। उसी का कथन दृष्टयव्य है-"हाँ ठीक कहती हो काकीजी। मैं पूजा-पाठ में मन लगाऊं और गाँववाले मेरी खेती बारी में मन लगावे और एक दिन पूजा से जागकर पाँऊ कि मेरे सारे खेत पट्टीदारों के नाम हो गए है और मैं अपने दोंनो बच्चो को लिए भिखारिन सी रास्ते पर खडी रहूँ उससे उसकी आत्मा को शांती मिलेगी ना।" गाँव की बुढी औरतो ने कहा अरे कौन समझावे इस बहुरिया को इसकी मति तो उलटी हो गई है। भवानी ने अपना घूँघट क्या उलट दिया मानो सारे गाँव का घूँघट उलटगया।

विधवा भवानी सुबह से शाम तक फिरकी की तरह नाचती रहती घर का काम दुआर बोहरना गाय को सानी पानी करना गोबर सिर पर उठा-उठाकार खेत में फेंकना समय बचाकर चर्खा कातना चर्खा ही तो उसकी जीविका का आधार बन गाया था। मानो सारे गाँव को चुनौती दे दी हो।"भवानी फागुन में फाग गीत गाते हुये अपनी खेत का काम करती थी। यह देखकर गाँव की बुढिया कहती- "हाय दइया इस बहुरिया को क्या हो गया है बिलकूल अपर बेल हो गई है मरद को मरे साल भी पूरा नही हुआ और यह घूम-घूमकर फागुआ गा रही है।"

गाँव का सुकुमार विधवा भवानी की दयनीय अवस्था को लेखक के सामने प्रस्तुत करता है- भवानी के हिस्से दो बीघे जमीन वो भी कई टुकडों में बटी हुई थी। ऐसी जमीन मे बीज बोना आवश्यक था। बाढ हट गई थी। खेत बोने का समय आ गया था। भवानी के पास कहाँ न बैल थे न हलवाह न बीज किसी के पास कहाँ इतनी अवकात कि कवार कार्तिक में किसी की सहायता करे। एक दिन गाँव का धनपति भवानी का खेत जोत कर बो दिया था। धनपति असहाय भवानी की

सहायता करके उस पर अपना अधिकार जमाना चाहता था। धनपति एक दिन आधी रात को भवानी के यहाँ जोर जबरदस्ती करता है। असहाय विधवा धनपतिया को काटती है और अपने को दारिद्री धनपति के बाहुपाश से मुक्त करती है। भवानी धनपतिया की करतूतो को कैसे गाववालो को बताती गाँव के लोग तो यही कहते भवानी का पति नही है इसके ही नियत में खोट है। असहाय भवानी इस घटना का कडूवा घूँट खामोशी से पि लेती है।

मुझे यहाँ वेदव्यास महाभारत आदि पर्व में विधवा के लिए कहा गया संदर्भ बताना आवश्यक लगता है।

उत्सृमामिष भूमौ प्रार्थथन्ति व्यथा खगा: पार्थ यन्ति जन: सर्वे पति हीना तथा स्त्रियम।" अर्थात : जैसे पक्षी पृथ्वीपर डाले हुए मास के टुकडे को लेने के लिए झपडते है, उसी प्रकार सब लोग विधवा स्त्री को वंश करना चाहते है। विधवा भवानी के मेहनत से फसल उच्छी आई थी उसे घर पर लाना बाकी था। धनपतिया फसल का हिस्सा माँगने आ जाता है। आधा हिस्सा देने से भवानी ने इन्कार किया। दूसरे ही दिन धनपतिने भवानी की फसल को आग लगा दी थी। गाँववाले भवानी का साथ नही देते। न्याय माँगने के लिए बेचारी कहा कहां दौडी थी। पंचायत की न्यायमूर्ती के पास गई पर कीसीने उसे न्याय नही दिया। सभी ने कहा धनपति के लोगो ने आग लगाते हुये किसी ने नही देखा। गाँववाले भी उसका साथ नही देते।

बरस पर बरस बीत गए उसे ऐसे ही जूझते अभावो से कुरुपताओं से अंधकारों से उपवास पर उपवास किए बाधाओं पर बाधाएँ पी लेकिन किसी के सामने झकी नही। अपार जीवट पाया है इस औरत ने अपने कोले के अमरुदों जामुनों नीबुओं को ले जाकर बाजार में बेचने लगी तो लोग झल्लाए " गाँव की नाक कट रही है ब्राम्हण की औरत का कुंजडिन की तरह बाजार में बैठना बडा ही खराब है।"इस पर भवानीने बडा ही करारा जवाब दिया - और बूढी हाँडी में मूँह डालते घूमना खलिहान फूँक देना बैल चुरा लेना, अच्छा काम है? ब्राम्हण का काम है।

वह दूसरे ही दिन कलवाले खेत में अपने अपने लडके के साथ हेंगा खीच रही थी और लडकी हेंगे पर चढी हुई थी इस दृश्य को देखकर लेखकने कहा है- " मैने कल्पना नही की थी कि स्वतंत्र भारत में एक औरत बैल की तरह हल हेंगा खीच सकती है।"

रामदरश मिश्र ने भारतीय विधवा की दयनिय पीडा उसका संघर्ष जीवन जीने की समस्याओं को स्पष्ट किया है। शहर में पढी लिखी विधवा का जीवन इतनी यातनाओ से नही गुजरता होगा। किन्तु गाँव की विधवा आज भी एक औरत एक जिंदगी की भवानी की तरह बीहड मार्ग से अपना जीवन व्यथीत करती है।

निष्कर्ष :-"एक और एक जिंदगी" की विधवा भवानी के लिए कवि निराला की कविता स्मरण होती है। " दीप शिखा की लौ के समान शांत भाव में लीन क्रूर काल के तांडव नृत्य की स्मृतिरेखा टूटे हुये तरु की लता के समान दीन व निस्साय होती है। वह षडत्रऋतुओं के श्रृंगार से अछूती रहती है। और दुनिया की नजरो से बचाकर चुपचाप रुदन करती रहती है। समाज में कोई उसेके रुदन से प्रभावित नही होता केवल धौर्यवान आकाश स्थिर समीर और सरिता की लहरे ही उसका विलाप सुनती है। लेखक ने भारतीय विधवा की संघर्ष गाथा को चित्रित किया है।

****

संदर्भ ग्रंथ :-

१) कामकाजी महिलाओं की कहानियाँ - ज्ञान राजेंद्र, प्रकाशक प्रभात चावडी बाजार दिल्ली
२) रामदरश मिश्र की १० प्रतिनिधी कहानीया- कमल प्रकाशन दिल्ली
३) भारतीय साहित्यकोश - महादेव शास्त्री
४) विधवा - सुर्यकांत त्रिपाठी निराला
५) एक औरत एक जिंदगी - रामदरश मिश्र पृ ४६,४७,५२,५४
६) साहित्य कुंज अंतरजाल

Social stigma and questions of mental health of transgender individuals in India

Dr.Disent Kumar Sahu
Assistant Professor
Pt. Ravishankar Shukla university, Raipur (C.G.)

Dr. Ravindra Kumar
Independent Research-
erravindrashreevp@gmail.com

Abstract -In India, transgender individuals have always been on the margins. However, the public and scholarly discourse has been impacted by the growing worry about their identity and mental health issues. The transgender community faces a variety of physical health and mental problems in addition to the long-standing discrimination and stigma attached to them. Historically, among all the LGTBIQ+ populations in India, the most stigma, prejudice, and marginalisation have been experienced by persons with diverse sexual orientations and gender identities. Individuals who identify as transgender, intersex, or queer face significant health consequences due to being denied access to healthcare, fundamental rights, bodily autonomy, and self-dignity.

Furthermore, transgender people's poor mental health and social marginalisation are caused by both internal and external pressures, a lack of health infrastructure, and other factors. The aim of this article is to describe how the absence of healthcare and societal stigma affect transgender people inside. This review study aims to highlight the issues surrounding the external and internal stigma and mental health status of transgender individuals in India.

Keywords: Transgender, Social Stigma, Internal Stigma, Mental Health

Introduction-Gender-varied men and transgender people with a variety of South Asian identities, such as hijras and kothis, who are severely stigmatised in Indian society, can be found in India. Although probably an underestimate, 488,000 of India's 1.25 billion citizens were believed to be transgender in 2011 (Thompson et al., 2019). Given that transgender people in India are known to be a heterogeneous group. Many indigenous gender-diverse identities, such as thirunangai, shivshakthi, or mangalmukhi in South India, and hijras or kinnars in North India, are associated with transfeminine individuals. Transfeminine individuals who identify as Hijras form a visible subculture with a sophisticated hierarchical social structure that includes Chelas, or disciples, and senior Hijras known as Gurus. The primary sources of income for Hijras are sex work, mangti (begging from people or merchants), and doli-badhai